(12)

कविवर सुनो हमारी बात

यद्यपि है कटु रूक्ष सुनो तुम कविवर मेरी बात।
क्यों उलझे हो तुम कीचड़ में छोड़ मृदुल जलजात।।1।।

पंक्तिबद्ध वह राज मरालों की जो विशद उड़ान।
मूल मुक्त वह नभ धरती की रेणु रहे हो छान।।2।।

दादुर से तुम चरित सुनाते बगुओं का जयगान।
नायक काग बने हैं तेरे कहां गया अभिमान।।3।।

पंकिल होती खेल खेल कर आज मनाते मोद।
किसके हाथ सने जाते हैं इसका है कुछ बोध।।4।।

यह कीचड़ भी एक दिवस जनकर लेंगे स्वीकार।
तब फिर कहां चलाओगे तुम वाणी का व्यापार।।5।।

क्रमशः खो देंगे सुतीक्ष्णता व्यंग्यों के आघात।
हिंसा शोषण अनाचार लगते साधारण बात।।6।।

या तो रमणी तुमको दिखती या फिर व्यंग्य विनोद।
या ईष्र्यालु बने तुम लेते लेखन से प्रतिशोध।।7।।

नहीं हास्य रस सृजन अरे यह कविता का उपहास।
हास्य व्यंग्य दासी वाणी नित छोड़ रही उच्छवास।।8।।

रचते थे आदर्श कभी तुम नरता के अवलम्ब।
होते हो कृतार्थ बन दर्पण चुनकर कुछ प्रतिबिम्ब।।9।।

अन्धकार के भेद जानते लगती सच यह बात।
रवि भी नहीं पहुंच पाता तुम जहां पहुंचते तात।।10।।

जनरुचि के कर्ता थे कल तक अनुवर्ती हो आज।
कालजयी थे कभी प्रसंगों के वशवर्ती आज ।। 11 ।।

पथिक और पंथों का वर्णन बना तुम्हारा साध्य।
लक्ष्य भूलने को किस कारण आज हुए हो बाध्य।। 12 ।।

तुंग धवल गिरि श्रंग अमल उत्पल नीलाम्बर भूल।
होते तुम्हें प्रतीत पंक पाषाण धूल अनुकूल।। 13।।

देती है अमरत्व लेखनी कविवर क्या है ध्येय।
ये नवीन नायक भारत के सदा रहें क्या गेय।। 14।।

आडम्बर शोषण प्रवंचना निर्धनता के चित्र।
यही देन क्या इस समाज को दे जाओगे मित्र ।।15।।